।। निशान ।।

चाहता हूं सद्भाववना की उजली तस्वीर बना दूं
जमाना मुड़ मुड़कर देखे और इतरायें
कोशिश और मेहनत भी करता हूं दिन रात
पर ये क्या तस्वीर उभर नही पाती
रंग धर नहीं पाती है परछाईयों के घाव से ।
मैं भयभीत रहने लगा हूं
सपने टूटने उम्मीदें बिखरने लगी है
श्रम के गारे की दीवार ढहने लगी है,
आंसूओं के रंग को परछाईयों का कुहरा ढंकने लगा है
सम्भावना पर कब तक जी पाउंगा
सोच सोच कर आतंकित रहने लगा हूं ।
संवेदना शून्य बना दिया हैं लोगों को
मानवीय रिश्ते में दरार डाल दिया है
आज भी परछाईयां संवर रही हैं
चैन से जीने भी नही देती हैं ये परछाईयां ।
बिखर गया है भविष्य और सपने भी
योग्यता हारने लगी हैं परछाईयों के आगे,
विषबाण सरीखे बेधने लगी हैं
भविष्य को सम्भावनाओं में ढूढ रहा हूं
चौपट तो हो गये है सपने मेरे
पर डर भी अभी बाकी है
कहीं परछाईंयों के आतंक से ,
निशान ना मिट जाये ,
पसीने और आंसूओं के मेरे.....

नन्दलाल भारती